1

परिचयः

प्रोत्साहन की एक बात

कभी आपको निराशा महसूस हुई है? हम में से अधिकतर लोग समय-समय पर निराश होते हैं।[1] हम बाइबल की एक ऐसी पुस्तक का अध्ययन करने जा रहे हैं, जो निराशा को दूर करने के लिए बनाई गई है और यह इब्रानियों की पुस्तक है। हो सकता है कि आपने इब्रानियों की पुस्तक के बारे में ऐसा न सोचा हो, परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, पुस्तक का एक उद्देश्य यही है। परिचय के इस पाठ में मैं इस ''प्रोत्साहन की बात'' को समझने, सराहने और इससे लाभ लेने के लिए आपको तैयार करने के लिए आगामी कुछ पाठों की कुछ पृष्ठभूमि दूंगा।

उपदेश, शान्ति, या प्रोत्साहन?

1985 में मैंने नील आर. लाइटफुट द्वारा पढ़ाई जा रही इब्रानियों की क्लास में भाग लिया था। भाई लाइटफुट ने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''इब्रानियों की पुस्तक का अध्ययन आरम्भ करने का स्थान अध्याय 13 है।''[2] 13:22 में इब्रानियों के लेखक ने कहा, ''हे भाइयो मैं तुम से विनती करता हूं, कि *उपदेश की बातों* को सह लो; क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है।''

अनुवादित शब्द ''उपदेश'' ''*paraklesis*'' से लिया गया है जो ''*parakaleo*'' का संज्ञा रूप है। पैराक्लेयो का अर्थ ''साथ बुलाना'' (*para* [की ओर] *kaleo* [बुलाना])।[3] अर्थात सहायता के लिए एक ओर बुलाना है। इस शब्द का अनुवाद ''उपदेश'' (इब्रानियों 13:22) या ''शान्ति'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:18) हो सकता है। इब्रानियों 10:25 में NASB में इसका अनुवाद ''प्रोत्साहित करना'' के रूप में इस शब्द के क्रियारूप में हुआ है। ''प्रोत्साहन'' शब्द में ''उपदेश'' की अवधारणा और ''शान्ति'' की अवधारणा दोनों आ सकते हैं। इब्रानियों के लेखक ने अपने निराश हुए पाठकों को शान्ति की बातों से कई बार प्रोत्साहित किया। परन्तु उसने उन्हें ताड़ना की कड़ी बातों के साथ चुनौती देते हुए तसल्ली भी दी।

जब मेरी बेटियां घर में रहती थीं तो मैं उन्हें हर बात के लिए प्रोत्साहित करते रहना चाहता था। कई बार तो *शान्ति* की बातें सीधी होती थीं पर कई बार उन्हें *उपदेश* या समझाना आवश्यक होता था, जिसमें मैं उन्हें अपना भरोसा बताता था कि किसी विशेष बात में वे किस प्रकार से सुधार ला सकती हैं। परमेश्वर हमारे साथ बच्चों की तरह व्यवहार करता है (देखें इब्रानियों 12:5, 7)। जब हम निराश हो जाते हैं, तो हमें शान्ति की बातों की आवश्यकता होती है; पर कई बार हमें कड़ी ताड़ना से लाभ भी मिलता है।

प्राप्तकर्त्ता, लेखक व सामग्री

प्राप्तकर्त्ताः प्रोत्साहन की आवश्यकता किसे थी?

इस पुस्तक का पुराना शीर्षक है ''इब्रानियों के नाम।'' इब्रानी यहूदियों द्वारा बोले जाने वाली

विशेष भाषा थी। ''इब्रानी'' शब्द का इस्तेमाल यहूदी लोगों के लिए किया जाता था। पवित्र शास्त्र में पुराने नियम के हवालों और उदाहरणों[4] से संकेत मिलता है कि यह यहूदी मसीहियों को ध्यान में रखकर लिखा गया था।

परन्तु इसमें हर जगह रहने वाले यहूदी मसीहियों को नहीं, बल्कि विशेष यहूदी मसीही लोगों को सम्बोधित किया गया था (देखें 13:17)। ये मसीही लोग लेखक को व्यक्तिगत रूप में जानते थे (देखें 13:18, 19, 23)। इसके अलावा पुस्तक स्पष्टतया पूरी मण्डली के लिए नहीं बल्कि मण्डली के भीतर एक समूह के लिए थी (देखें 13:17, 24)।

हम संक्षेप में यह नहीं जानते कि ये यहूदी मसीही कौन थे या कहां रहते थे।[5] परन्तु वचन कई बार उनके बारे में विस्तार से बताता है। वे दूसरी पीढ़ी के मसीही थे (2:3), जिन्होंने कुछ समय पहले सुसमाचार को माना था (5:12; 10:32)। उन्होंने मसीही जीवन बड़े जोश से आरम्भ किया था (6:10; 10:33, 34) पर निराश हो गए थे। अब वे आराधना सभाओं में नहीं जाते थे (10:25)। स्पष्टतया वे ऐल्डरों की अगुआई को मानने से हिचक रहे थे (13:17)। उनके विश्वास को त्यागने का खतरा बना हुआ था[6] (2:1, 3; 6:1-6; 10:26-31)।

उनकी निराशा में किन कारणों का योगदान था? एक कारण तो सताव हो सकता है (10:32)। यह और भी बुरा होने वाला था (12:4)। इसके अलावा स्पष्टतया उन पर यहूदी मत में वापस जाने का दबाव पड़ रहा था (शायद गैर मसीही यहूदियों द्वारा)। इस प्रकार के तर्क मसीहियत के विरुद्ध लगाए जा रहे थे: ''मसीहियत में कोई प्रधान याजक नहीं है, बलिदान का कोई प्रबन्ध नहीं है, यरूशलेम की तरह कोई बड़ा नगर नहीं है।'' लेखक का जवाब था कि मसीहियत के पास यह सब कुछ है और वास्तव में मसीहियत में वे उससे *उत्तम* हैं।[7]

हम में से अधिकतर लोग यहूदी मसीही नहीं हैं, तो क्या यह हमारे ऊपर लागू होता है? हो सकता है कि हम यहूदी मसीही न हों, पर बेशक हम इसे अपने साथ जोड़ सकते हैं। शायद हम ने मसीही जीवन का आरम्भ जोश के साथ किया है पर समय के बीतने के साथ हमारा वह जोश अब ठण्ड़ा पड़ चुका है। संसार हमारे कानों में फुसफुसाता है कि हम इसके द्वारा दिए जाने वाले आनन्द और प्रमोद को खो रहे हैं। हम जीवन के अपने पुराने ढंगों में वापस जाने के प्रलोभन में आ सकते हैं। इब्रानियों की पुस्तक का एक संदेश यह है कि मसीहियत में मिलने वाली आशिषें *किसी भी व्यक्ति* या *वस्तु* द्वारा पेश की जाने वाले आशिषों से उत्तम या बेहतर है।

लेखक: प्रोत्साहन किसने दिया?

लेखक ने अपना परिचय नहीं दिया।[8] इस पत्र के मूल प्राप्तकर्त्ताओं को मालूम था कि लेखक कौन था (देखें 13:19) पर हमें नहीं मालूम।

सदियों से इब्रानियों की पुस्तक को पौलुस के लेखों में से एक माना जाता रहा है। KJV के कुछ मुद्रणों में इसका शीर्षक ''इब्रानियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री'' किया गया है। परन्तु हाल ही के वर्षों में पुस्तक के लेखक के रूप में पौलुस की बात पर सवाल उठाया गया है। कई बार यह बात सुनाई देती है कि ''पौलुस ने इब्रानियों की पुस्तक नहीं लिखी हो सकती है।'' इसके विपरीत पुस्तक के कई हवाले पौलुस के जैसे लगते हैं (उदाहरण के लिए, 13:22-25), और मैं किसी निर्णायक प्रमाण के बारे में नहीं जानता, जिसमें कहा गया हो कि वह लेखक नहीं था। इस

पर मेरे अपने अध्ययन से[9] मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इब्रानियों की पुस्तक तो पौलुस द्वारा या पौलुस द्वारा प्रभावित किसी व्यक्ति शायद लूका, सीलास, अपुलोस या बरनबास द्वारा लिखी गई थी। मेरे एक मित्र का कहना है, ''इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के विषय में जो पक्की बात हम जान सकते हैं वे यह है कि इसे तीमुथियुस द्वारा नहीं लिखा गया था'' (देखें इब्रानियों 13:23)।

हो सकता है कि हमें उसके नाम का पता न हो जिसने यह पुस्तक लिखी, पर हम उसके बारे में कई बातें जानते हैं:

- वह बड़ा ही शानदार प्रचारक था। पुस्तक का अधिकतर भाग एक लिखा हुआ प्रवचन लगता है।
- उसे उनकी जिन्हें वे सम्बोधित कर रहा था *परवाह थी*। हम में से हर किसी को ऐसे मित्रों की आवश्यकता होती है जिन्हें हमारी आत्मिक स्थिति की परवाह हो।
- वह परमेश्वर पर निर्भर था (देखें 4:7; 13:5)।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य जो हमें जानना आवश्यक है वह यह है कि इसे पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिया गया (देखें 3:7)। पवित्र आत्मा ने हमारे लिए इस पत्री को सम्भाला, क्योंकि परमेश्वर को हमारी *परवाह* है। वह हमें सहायता देना, सामर्थ देना और हां निराशा के समय हमें प्रोत्साहन देना चाहता है।

सामग्री: प्रोत्साहन क्या रूप लेता है?

पुस्तक की संरचना निराली है। इसका ''आरम्भ एक संधी की तरह होता है, प्रवचन की तरह जारी रहती है और पत्र की तरह समाप्त होती है।''[10] जैसा कि देखा गया है कि पुस्तक का अधिकतर भाग एक लिखा हुआ प्रवचन लगता है। प्रवचन में प्रचारक ने शिक्षा (तर्क) और प्रासंगिकता (उपदेश) में अन्तर किया:

I. तर्क: मसीह भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों से उत्तम है (1:1-14)।
II. उपदेश (2:1-4)।
III. तर्क: मसीह स्वर्गदूतों और मूसा से उत्तम है (2:5-3:6)।
IV. उपदेश (3:7-4:16)।
V. तर्क: मसीह के पास उत्तम याजकाई है, भाग 1 (5:1-10)।
VI. उपदेश (5:11-6:20)।
VII. तर्क: मसीह के पास उत्तम याजकाई है, भाग 2 (7:1-10:18)।
VIII. उपदेश (10:19-13:25)।

इब्रानियों की पुस्तक को पढ़ते हुए देखें कि लेखक ने आम तौर पर उपदेश के एक भाग के बाद किस प्रकार से अपने तर्क को उठाया है। उदाहरण के लिए, देखें कि 2:5 किस प्रकार से 1:14 के विचार को संक्षिप्त करता है और 7:1 किस प्रकार से 5:10 के विचार को आगे बढ़ाता है।

निराश मसीही लोगों को दो बातों की आवश्यकता है: (1) संदेह को दूर करने के लिए मज़बूत शिक्षा और (2) अविश्वास को दूर करने के लिए (मसीही जीवन जीने का) मज़बूत प्रोत्साहन। पुस्तक का मुख्य वचन इब्रानियों 5:12–14 है[11] जो सुझाव देता है कि उनकी समस्या मुख्यतया यह थी कि उन्होंने अध्ययन नहीं किया था। वे इस प्रकार से नहीं बढ़े थे जैसे उन्हें बढ़ना चाहिए था यानी मसीही लोगों के रूप में वे परिपक्व नहीं थे।

मुझे और आपको भी उसी की आवश्यकता है जिसकी उन आरम्भिक मसीही लोगों को भी इब्रानियों की पुस्तक इस पर काफ़ी जानकारी देने के साथ-साथ मूल्यवान प्रोत्साहन भी दे सकती है। परमेश्वर के वचन के गम्भीर छात्र बनने की ठान लें और इस निराले पत्र की अपनी समझ में बढ़ते रहें।

पृष्ठभूमि की अन्य बातों में एक यह है कि यह पुस्तक कब लिखी गई। ऐसा लगेगा कि पुस्तक के लिखे जाने के समय बलिदान का यहूदी प्रणाली जारी थी (देखें 9:6–10; 13:10)। यदि ऐसा है तो यह पुस्तक को 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश से पहले का लिखा हुआ, बताता है। परन्तु आरम्भ करने के लिए हमें पृष्ठभूमि की काफ़ी जानकारी दी गई है। अगली प्रस्तुति के साथ हम वचन का अपना अध्ययन आरम्भ करेंगे।

टिप्पणियां

[1]उन परिस्थितियों के उदाहरण दें जिनसे लोग निराश होते हैं। [2]नील आर. लाइटफुट, 13 सितंबर 1985, को फोर्ट वर्थ, टैक्सट इब्रानियों पर एसीयू की एक्सटेंशन क्लास में पढ़ाया गया। परिचय के इस पाठ में पृष्ठभूमि की अधिकतर जानकारी इब्रानियों 13 से ली गई है। [3]ई. डब्ल्यू. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स क़म्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 217. [4]इब्रानियों की पुस्तक के भाग पुराने नियम की कुछ जानकारी के बिना समझना लगभग असम्भव है। [5]उनकी स्थिति के सम्बन्ध में अनुमानों में यरूशलेम और रोम भी हैं। [6]''विश्वासत्याग'' ऐसा शब्द है जिसका अर्थ अपने धर्म को पूरी तरह से त्याग देना है। [7]इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य शब्द ''उत्तम'' है। [8]सुसमाचार के चारों वृत्तांतों और प्रेरितों के काम सहित बाइबल की अन्य पुस्तकों पर भी यही बात लागू होती है। [9]अध्ययन से पहले मैंने इस स्थिति को मान लिया था कि इब्रानियों की पुस्तक पौलुस द्वारा नहीं लिखी गई थी। अध्ययन के बाद मैंने निष्कर्ष निकाला है कि अधिक सम्भावना उसी की है पर इब्रानियों की पुस्तक के लेखक होने की बात फिलहाल साबित नहीं की जा सकती। [10]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 43.

[11]पुस्तक का अधिकांश भाग अन्य पुरुष में है, पर यह अतिव्यक्तिगत वचन मध्यम पुरुष (''तुम'') में है।